ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(11): 176-183
www.allresearchjournal.com
Received: 20-09-2021
Accepted: 23-10-2021

जगन्नाथ कुमार यादव
रिसर्च फेलो, बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
रिसर्च फेलो, बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

बौद्धकालीन शक्तिशाली राज्यों की राजनीतिक गतिविधियाँ

जगन्नाथ कुमार यादव

सारांश
बौद्धकालीन राजनीतिक गतिविधियों को जानने के लिए उस समय के शक्तिशाली राज्यों के आपसी संबंधों का अध्ययन जरुरी है । इसके पर्याप्त तथ्य बौद्ध साहित्यों में मौजूद है । उसी को आधार बना कर इस शोध कार्य को किया गया है । जिसके तहत तत्कालीन शक्तिशाली राज्यों के बारे में विस्तृत अध्ययन किया गया है। इस शोध कार्य में उसके सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, और धार्मिक स्थिति तथा आपसी संबंधों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने की कोशिश की गयी है। इसके अलावा, तत्कालीन राज्यों के साम्राज्यवादी रवैया की भी व्याख्या की गयी है, जिसके तहत शक्तिशाली राज्यों के बीच हुए युद्ध का वर्णन किया गया है ।

कूटशब्द: बुद्ध, बौद्धकालीन, राजनीतिक, राज्य, सामाजिक, युद्ध, मगध, कोसल, वज्जि, युद्ध, महाजनपद, राजतन्त्र, गणतंत्र ।

प्रस्तावना
बुद्ध के समय शक्तिशाली राज्यों की राजनीतिक गतिविधियाँ पर बात करने से पहले उस समय के राजनीतिक स्थिति पर चर्चा करना जरुरी है । यह स्थिति मुख्यतः सोलह महाजनपदों पर आधारित थी । इस सोलह संप्रभु शक्तियों के विषय में अंगुतर निकाय में वर्णन किया गया है ।[2] ये सोलह राज्य तत्कालीन राजनैतिक भूगोल के आधार माने जाते है । बुद्धकालीन यानी लगभग छठीं शताब्दी ई.पू. के राज्य, जिनका वर्णन अंगुतर निकाय में निम्न प्रकार किया गया है- "अंग, मगध, काशी, कोसल, वज्जि, मल्ल, चेती, वंस, कुरु, पंचाल, मत्स, सुरसेना, अस्सका, अवन्ती, गंधार और कम्बोज थे ।"[1]

[1] "यो इमेसं सोलसन्नं महाजनपदानं पहुतसत्तरतनानं इस्सराधिपच्चं रज्जं कारेय्य, सेय्यथिदं- (1) अंगानं (2) मगधनानं (3) कासीनं (4) कोसलानं (5) वज्जीनं (6) मल्लानं (7) चेतीनं (8) वंसानं (9) कुरुनं (10) पंचालानं (11) मच्छानं (12) सुरसेनानं (13) अस्सकानं (14) अवंतीनं (15) गन्धारानं (16) कंबोजानं।" (अंगुत्तर निकाय)
मैंने यह उद्धरण धर्मानन्द कोसम्बी कृत 'भगवान बुद्ध : जीवन और दर्शन' (पेज-36) से लिया है ।
और देखें, सत्यकेतू विद्यालंकार, प्राचीन भारत की शासन और राजनीतिक विचार, पेज-86
[2] टी. डब्लू. रायस डेविड्स, बुद्धिस्ट इंडिया (दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 1984), पेज-23-24
[3] डॉ. हेमचन्द्र रायचौधरी, प्राचीन भारत के राजनैतिक इतिहास, (इलाहाबाद: किताब महल, 1971) पेज-183

सोलह शक्तिशाली राज्यों में मगध, कोसल, अवन्ती, वंस और लिच्छवी या वज्जि बुद्ध के काल में अधिक शक्तिशाली थे। इनमें से मगध, कोसल, अवन्ती और वंस राज्यों में राजतन्त्र था तथा लिच्छवी में गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली थी । इन राज्यों में कुछ दूसरों पर निर्भर थे, तो वहीं कुछ स्वतंत्र राज्य थे । बुद्ध के काल में सोलह महाजनपदों में दो महाजनपद काशी तथा अंग दूसरों पर निर्भर रहने वाले राज्य थे । अंग मगध के अधीन था । बुद्ध के काल में काशी की राजनीतिक स्तर इतना निम्न हो गया था कि नगरों का कर वसूलने के लिए कोसल और मगध के बीच में निरंतर लड़ाइयाँ हुआ करती थी । कुछ समय के लिए काशी कोसल के अधीन था । [2] सोलह महाजनपदों में से कुछ महाजनपद स्वतंत्र तो थे, लेकिन इतने बड़े नहीं थे कि उन्हें महान शक्ति का संज्ञा दी जाए । किन्तु वे मगध तथा कोसल जैसे बड़े राज्यों के आक्रमण से सुरक्षा का दावा कर सकते थे । बुद्ध के समय में इन राज्यों के बीच कुछ युद्ध भी हुए।

मगध

बुद्ध के काल में मगध एक महान शक्ति हुआ करती थी । यहाँ राजतंत्रात्मक सत्ता प्रणाली थी । मगध के राजा बिम्बिसार के शासन क्षेत्र में अस्सी हज़ार से अधिक उपनगर थे । [3] बुद्ध के समय में मगध में बिम्बिसार तथा उसका पुत्र अजातशत्रु राज करते थे। राज्य का कुल क्षेत्रफल तीस योजन तक फैला हुआ था । राजधानी राजगृह का क्षेत्रफल तीन योजन तक फैला था । नगरों के अन्दर और बाहर अठारह करोड़ जनसंख्या निवास करती थी ।

मगध राजशाही परिवार

राजा बिम्बिसार ने पंद्रह साल की आयु में गद्दी संभाली तथा राजगृह पर बावन सालों तक शासन किया । राजा बिम्बिसार की मुख्य महारानी महाकोसल की बेटी तथा प्रसेनजित की बहन कोसल देवी थी । शादी के दिन महारानी को दहेज़ के रूप में काशी का एक गाँव भेंट किया गया। उसका पुत्र अजातशत्रु था । बिम्बिसार की अन्य पत्नियाँ भी थी, जिनका नाम-खेमा एवं पद्मावती था। ये दोनों बाद में भिक्षुणी बन गई। पद्मावती को पुत्र का नाम अबय/अभय था। बिम्बिसार के आम्रपाली से भी विमय और कोंद्दन नामक दो पुत्र थे और अन्य पत्नियों से सिल्वा और जयसेन नामक दो पुत्र थे। एक बेटी भी थी, जिसका नाम चुंदी था । [4]

मगध के उच्चाधिकार

महापरिनिर्वाण सुत्त के अनुसार, ब्राह्मण वेस्कार मगध के प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री के पद पर कार्यान्वित थे ।[5] अन्य दो मुख्यमंत्री सुनिधा एवं कोटिया थे । सुमन मालागार माली था, जिसका काम चमेली के फूलों का हार राजा के लिए प्रतिदिन तैयार करना होता था । कुमार जीवक भारद्वाज एक उत्कृष्ट युवा वैद्द था, जो एक राजकीय चिकित्सक था ।[6]

मगध की अर्थव्यवस्था

मगध व्यापार का एक केंद्र था तथा यहाँ के लोग काफ़िला बनाकर अर्थात् समूह में व्यापार करते थे । ये व्यापारी भारतवर्ष के महत्वपूर्ण जमा खनिज जैसे लोहा तथा ताँबा, वाले मार्ग को पार कर दक्षिण-पूर्व के धालभूम और सिंघभूम जिलें में पहुँचते थे । मुख्य प्राकृतिक संपदाओं पर मगध का जैसे एकाधिकार हुआ करता था । अन्य राज्यों से भी बहुत से लोग मगध आकार वस्तुओं का आदान-प्रदान करते थे ।[7] इस प्रकार, मगध की अर्थव्ययस्था प्राकृतिक खनिज़ संपदाओं तथा व्यापार पर आधारित थी । इसमें कोई शक नहीं है कि यहाँ बहुत से ऐसे व्यापारी थे, जिनके पास असीमित धन था ।[8] उनके पास सोने तथा अन्य उत्पाद हुआ करते थे और वे आर्थिक तथा राजनीतिक मामलें में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे । यह भी सत्य है कि जिनके हाथ में अर्थव्यवस्था होती है, वो राजनीति को भी नियंत्रित करते हैं ।

[4] चार्ल्स रॉकवेल लान्मेन (एड.), बुद्धिस्ट लेजेंड्स, वॉल्यूम-XXIX ट्रांस., यूजीने वास्टन बुर्लिंगामे (लन्दन: पालि टेक्स्ट सोसाइटी, 1979), पेज- 60

[5] राहुल सांकृत्यायन, दीघ निकाय, पेज-117

[6] चार्ल्स रॉकवेल लान्मेन (एड.), बुद्धिस्ट लेजेंड्स, वॉल्यूम-XXIX, पेज-123

मगध अन्य शक्तियों की तुलना में सर्वशक्तिशाली था क्योंकि इसकी आर्थिक सम्पदा काफी सम्पन्न थी । आधुनिक समय में सत्ता तथा समाज का स्तर बदल चुका है, फिर भी आर्थिक शक्ति राजनीतिक शक्ति को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । प्राचीन काल से ही अर्थव्यवस्था एक महत्वपूर्व कड़ी रही है ।

अन्तरराज्यीय सम्बन्ध

पड़ोसी राज्यों के साथ बिम्बिसार के हमेशा ही अच्छे संबंध रहते थे । कोसल का राजा प्रसेनजित और बिम्बिसार में पारिवारिक संबंध था क्योंकि प्रसेनजित की बहन का विवाह बिम्बिसार से हुआ था । विवाह सम्बन्धी गतिविधियाँ प्राचीन काल में भारतीय राजनीति का एक महत्वपूर्ण अंग थी । यह वैवाहिक प्रथा रक्त तथा पारिवारिक सम्बन्ध को बढ़ावा देती थी । इस विवाह का उद्देश्य आपसी रिश्तों को मजबूत करना तथा अंतरजातीय

और अंतरराज्यीय भेदभावों को दूर करना था । बुद्ध के काल में मगध तथा कोसल के बीच में युद्ध के कोई प्रमाण नहीं मिले हैं।

पंथनिरपेक्षता की भावना

बिम्बिसार ने बौद्ध धर्म का अनुसरण अपने जीवन में प्रकाश लाने के लिए किया था, न कि इसका प्रयोग अफ़ीम की तरह किया था । यह सत्य है कि बिम्बिसार बुद्ध का अनुयायी था, इसके बावजूद भी उसने न तो किसी अन्य धर्म के मार्गों में बाधा पैदा किया और न ही अपने राज दरबार के किसी सम्मलेन में उसे भाग लेने से रोका । धम्मपद के अट्ठकथा के अनुसार, बिम्बिसार के राज दरबार (राजगृह) में उस समय छः विभिन्न धर्म के शिक्षक थे ।[9] यह एक पंथनिरपेक्ष राज्य कहा जा सकता है क्योंकि बिम्बिसार ने सभी धर्मों को अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार अपने सिद्धांतों के प्रचार तथा उपदेश देने की छूट दी थी । इस तरह कोई एक धर्म राजकीय धर्म का दावा नहीं कर सकता था।

[7] डी. डी. कोसंबी, एन इंट्रोडक्शन टू द स्टडी ऑफ़ इंडियन हिस्ट्री (बॉम्बे: पोपुलर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 1988), पेज-154-155

[8] वहीं

राजगृह विभिन्न धार्मिक शिक्षकों तथा विभिन्न क्षेत्र के विद्वानों का केंद्र बन गया था । ऐसा कहा जाने लगा था कि जो भी व्यक्ति धर्म की स्थापना करना चाहता हैं, उसे राजगृह जाकर अपने सिद्धांतों का उपदेश देना चाहिए। यदि उसे बहुत से लोगों समझते तथा मान्यता देते हैं, तो वह धर्म के रूप में स्थापित हो जायेगा ।

पंथनिरपेक्षता की नीतियों का अनुसरण करने के कारण वहाँ विभिन्न धर्मों के बीच कोई संघर्ष नहीं था । जो लोग राज्य के अंदर रहते थे, उन्हें अपनी पसंद के अनुसार किसी भी धर्म को मानने की आज़ादी थी । यद्यपि मगध राज्य में राजतंत्रात्मक सत्ता प्रणाली थी तथा सामाजिक एवं राजनीतिक नियंत्रण पूर्णतय राजा के हाथ में होता था; फिर भी राजा अपनी शक्तियों को एक तानाशाह की भांति इस्तेमाल नहीं करता था । राजा के द्वारा सद्गुणों का आचरण किया जाता था तथा उनके संरक्षण व संवर्धन के लिए प्रयास किये जाते थे । प्लेटो के विचार में बिम्बिसार एक दार्शनिक राजा है ।

अपने दयालुता तथा अंतःपरोपकार से ओत-प्रोत पंथनिरपेक्ष राजनीति के संरक्षणकर्त्ता बिम्बिसार की मृत्यु बड़ी ही दुखदायी रही । उसका अपना ही पुत्र अजातशत्रु, जिसके लिए बिम्बिसार ने गद्दी छोड़ी थी, ने उसे कई तरीकों की यातनाएं देते हुए जेल में डाल दिया । जिसके कारण अंततः बिम्बिसार की दुर्भाग्यपूर्ण मौत हो गई । रोमिला थापर जैसी महत्वपूर्ण इतिहासकार का मानना है कि मगध पर शासन करने के लिए अधीर अजातशत्रु ने राजा बनने के लिए 493 ई. पू. के आसपास अपने पिता बिम्बिसार की हत्या कर दी ।[10]

[9] चार्ल्स रॉकवेल लान्मेन (एड.), बुद्धिस्ट लेजेंड्स, वॉल्यूम- XXX, पेज-36

अजातशत्रु का कार्यकाल

अजातशत्रु का कार्यकाल अपने पिता की तुलना में बहुत ही अलग था । आन्तरिक तथा बाहरी नीतियाँ भी अलग थी। अपने कार्य क्षेत्र में वह काफी बुरे और स्वार्थी स्वभाव का था । वह वित्तमंत्री जोतक का खूबसूरत महल पाने की इच्छा रखता था लेकिन कभी सफल न हो सका । बिम्बिसार के समय में अन्तर्राष्ट्रीय नीति इस प्रकार थी कि वह बड़े तथा छोटे राज्यों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखता था, किन्तु अजातशत्रु ने इन राज्यों पर आक्रमण कर उनसे युद्ध करना शुरू कर दिया था ।

मगध का कोसल तथा वैशाली का युद्ध

सबसे पहले युद्ध का कारण अजातशत्रु द्वारा बिम्बिसार की हत्या किया जाना था । महारानी कोसल देवी ने बिम्बिसार के प्रेम और शोक में अपनी जान गवां दी थी। उनकी मृत्यु के बाद भी मगध का राजा काशी गाँव के राजस्व से लाभान्वित था, जोकि महारानी कोसल देवी को दहेज़ के रूप में दिया गया था । किन्तु कोसल के राजा ने यह निर्णय लिया कि एक पिता के हत्यारों को उस ग्राम का अधिकार नहीं होना चाहिए[11], जिसपर वह अनुवांशिक रूप से दावा कर रहा है । और इस प्रकार युद्ध शुरू हो गया ।[12] युद्ध के दौरान कभी कोसल राजा प्रभावी दिखता था, तो कभी अजातशत्रु । कोसल के राजा तीन बार पराजित हुए । अंततः अजातशत्रु के हारने के बाद युद्ध का समापन हुआ । कोसल के राजा ने अजातशत्रु को कैद कर लिया, किन्तु भांजा होने के कारण उसे जीवनदान दिया । कोसल के राजा ने बंदी राजा के सैनिकों को ज़ब्त कर लिया, किन्तु अपनी बेटी वजिरा का हाथ अजातशत्रु के हाथ में देकर उसे खुश कर लिया । राजकुमारी और अजातशत्रु के विवाह के बाद काशीग्राम पुनः मगध राज्य को दहेज़ में मिल गया और शांति स्थापित हो गई ।[13]

[10] रोमिला थापर, पूर्वकालीन भारत (अनु- आदित्य नारायण सिंह), पेज-197

[11] डॉ. हेमचन्द्र रायचौधरी, प्राचीन भारत के राजनैतिक इतिहास, (इलाहाबाद: किताब महल, 1971) पेज-185

[12] वहीं

यद्यपि अजातशत्रु कोसल के राजा से पराजित हो गया था । अपने पड़ोसियों से लड़ने का विचार अभी भी उसने नहीं छोड़ा था । उसने अपने पड़ोसी राज्य वैशाली से युद्ध करना शुरू कर दिया, जो बुद्ध के समय में एक समृद्ध राज्य हुआ करता था । मगध एवं वैशाली के बीच युद्ध की प्रारंभिक जानकारियां पालि ग्रन्थ में मिलती हैं । महापरिनिर्वाण सुत्त इस बात की व्याख्या करता है कि अजातशत्रु वज्जियों पर आक्रमण करने में समर्थ था । इस सम्बन्ध में बुद्ध का विचार जानने के लिए उसने मगध के प्रधानमंत्री बस्स्कर ब्राहमण को बुद्ध के पास भेजा था । इस सन्दर्भ में बुद्ध की प्रतिक्रिया आनंद के साथ वार्तालाप में निहित है, जो आधुनिक गणतांत्रिक एवं लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली के लिए महत्वपूर्ण है । बुद्ध ने जो कहा है, उसके अनुसार राष्ट्रीय समृद्धि के सात उपाय हैं ।[14] जिसकी चर्चा हम आगे करेंगे । बुद्ध ने वस्सकर को बताया कि राष्ट्रीय समृद्धि के इन उपायों के बारे में उन्होंने वज्जियों को क्या शिक्षा दी है । उन्होंने यह भी बात कहीं कि जब तक ये सारी स्थितियां वज्जियों के साथ हैं, उनका पतन नहीं होगा किन्तु समृद्धि ही होगी ।

ऐसा सुनाने के बाद वस्सकर ने यह निष्कर्ष निकाला कि वज्जियों को मगध के राजा द्वारा बिना कूटनीति और एकजुटता को तोड़े बिना नहीं हराया जा सकता है । किन्तु बुद्ध की मृत्यु से पहले तक इस नीति को नहीं अपनाया गया। वज्जियों के बीच में आपसी फूट के बीज बोने की नीति वस्स्कर के नेतृत्व में मगध राजनैयिक द्वारा अपनायी गयी। इस नीति के कारण वज्जि बिलकुल ख़त्म हो गया ।[15]

धार्मिक मामले

[13] वहीं

[14] राहुल सांकृत्यायन, दीघ निकाय, पेज-118

[15] डॉ. हेमचन्द्र रायचौधरी, प्राचीन भारत के राजनैतिक इतिहास, पेज-187

मगध का राजकाज सँभालने के बाद अपने पिता की तरह अजातशत्रु धार्मिक मामलों में बहुत ज्यादा संलग्न तो नहीं था, किन्तु उसने बौद्ध के दो समारोह में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई थी । महापरिनिर्वाण सुत्त की कथा के अनुसार, जब मगध के राजा अजातशत्रु को यह ख़बर लगी कि बुद्ध कुसिनारा में अंतिम समाधि ले चुके हैं, तब उसने मल्ल को यह सन्देश भिजवाया कि बुद्ध के अवशेष का एक हिस्सा उसे भी दिया जाए । बुद्ध के महापरिनिर्वाण के तुरंत बाद राजगृह में हुई प्रथम संगीति को शुरू से अंत तक अजातशत्रु ने अपना संरक्षण दिया । यद्यपि अजातशत्रु का शासनकाल, जोकि बतीस वर्षों का था, के विषय में कुछ ज्यादा जानकारियां नहीं हैं । वह अपने पुत्र उदय के द्वारा मारा गया था ।

कोसल

कोसल मगध के उत्तर-पश्चिम में काशी से आगे कोसल लोगों द्वारा बसाया गया एक देश था । बुद्ध के समय में यह एक शक्तिशाली राज्य हुआ करता था, जहाँ प्रसेनजित का शासन था । उसके बाद उसके पुत्र उदयभद्द ने वहाँ का शासन संभाला । सरयू नदी कोसल को दो भागों उत्तर कोसल तथा दक्षिण कोसल में विभाजित करती थी ।

सोलह महाजनपदों में उस समय कोसल शक्तिशाली एवं समृद्ध राज्य था । ऐसा कहा जाता है कि मगध के बाद यह दूसरा सबसे शक्तिशाली राज्य था । छठी शताब्दी ई. पू. कपिलवस्तु का शाक्य क्षेत्र कोसल राज्य के अधीन आता था । बुद्ध के काल में इसकी राजधानी, श्रीवस्ती, की जनसंख्या सात करोड़ थी । राज्य की कुल जनसंख्या अठारह करोड़ थी। यहाँ प्राचीन राजतंत्रात्मक प्रणाली के आधार पर शासन किया जाता था ।

कोसल राज परिवार

कोसल का राजा महाकोसल का पुत्र था तथा उसकी शिक्षा-दीक्षा तक्षशिला में हुई थी । घर लौटने के बाद उसके पिता राजा की विद्वता से इतना प्रसन्न हुए कि उसे राजा बना दिया । उसकी दो बहनों का नाम कोसल देवी एवं सुमना था। उसकी अन्य पत्नियाँ भी थी । जिनका नाम उब्बीरी, सोमा और सकुला था । बिम्बिसार की बहन भी प्रसेनजित कोसल की पत्नी थी ।

[16] पी. वी. बापट, बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष, (दिल्ली: प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 1956), पेज-9

प्रसेनजित यह चाहता था कि वह बुद्ध के परिवार से अपना रिश्ता जोड़े ताकि उनके और करीब आ सकें । इसलिए उसने शाक्य के मुखिया को सन्देश भेजा कि वह अपनी एक पुत्री का विवाह उससे कर दे । शाक्य इसे अपने वंश की गरिमा के खिलाफ़ मानते थे, किन्तु अपने राजा को खुश करने के लिए उसे महानामा और दासी मगमुदा से जन्मी पुत्री वसब्बा क्षत्रिय को प्रसेनजित के लिए भेज दिया । जिससे प्रसेनजित को विडूदभ नामक पुत्र हुआ। प्रसेनजित को एक अन्य पुत्र था, जिसका नाम ब्रह्मदत्त था । बाद में वह अर्हत बन गया ।

शासन के दौरान प्रसेनजित प्रशासनिक दायित्वों से हार्दिक रूप से जुड़ा था तथा अपने राज्य के बुद्धिमान एवं श्रेष्ठ लोगों का सम्मान करता था । बुद्ध के समय प्रसेनजित

उनका अनुयायी एवं मित्र बन गया तथा उसकी भक्ति बुद्ध के महापरिनिर्वाण तक कायम रही ।

कोसल राज्य के उच्चाधिकारी

राजा प्रसेनजित के मुख्यमंत्रियों में उग्गो एवं सूवाद्धा थे । तक्षशिला के अपने सहपाठी बंधुला को प्रसेनजित कोसल ने सेनापति के पद से नवाज़ा था । राजा के दो अन्य मंत्रियों का नाम काला और जुन्हा था । एकबार काला ने बुद्ध के उपदेशों में ध्यान नहीं लगाया इसीलिए राजा ने उसे राज्य से निष्कासित कर दिया । अनाथपिन्डक, जो श्रीवस्ती का एक बड़ा साहूकार था, राजगृह में बुद्ध से मिलकर बहुत प्रभावित हुआ एवं उनका अनुयायी बन गया । उसने बुद्ध को अपने नगर आने का निमंत्रण दिया तथा उनके लिए प्रख्यात जेतवन का निर्माण कराया। यह विहार बुद्ध का प्रसिद्ध स्थान बन गया । उन्होंने यहीं अपने जीवन का अधिक समय बिताया व उपदेश दिये ।

राजा ने साधुओं के भेस में जासूसी क्रियाकलापों के लिए रूप बदलने वाले लोगों को भी नियुक्त किया था । इनमें तुरुक्का ब्राहमण, पोक्खारास्ती ब्राह्मण, जमेस्सोनी ब्राहमण और तोद्या ब्राहमण थे । यह सब राज दरबार के पुजारी थे ।

कोसल का अन्य राज्यों के साथ सम्बन्ध

प्रसेनजित के समय कोसल का सम्बन्ध अन्य राज्यों से बड़ा ही सरल था । यद्यपि राजा एक बड़े क्षेत्र पर शासन करता था, कोई भी उपनगर उससे अलग नहीं होना चाहता था । वह अपने उपनगरों पर इस तरह शासन करता था, जैसे कोई पिता अपने पुत्र पर । राज्य का सम्बन्ध अधिकतर भाईचारे पर आधारित था, न कि मालिक और नौकर के संबंधो पर । इन सद्गुणों के आधार पर कोसल अपनी महान शक्ति को बरकारर रखा था । जब वो श्रीवस्ती में था, तब मध्याहन भोजन के बाद अक्सर बुद्ध से प्रशासिनक तथा नैतिक मामलों की शिक्षा लिया करता था ।

अन्य शक्तियों के साथ सम्बन्ध आपसी हित तथा समझ पर आधारित थे । धम्मपद अट्ठकथा के अनुसार, मगध से कोसल के वैवाहिक एवं आर्थिक सम्बन्ध थे ।[17] कोसल के अन्य राज्यों के सम्बन्ध के बारे में पालि ग्रन्थ में बहुत अधिक नहीं मिलता है, किन्तु यह प्रतीत होता है यह कि यह कार्य काफी सुगम हुआ करता था ।

अन्य राज्यों के साथ युद्ध

तच्छसुकर जातक[18] में राजा प्रसेनजित और राजा अजातशत्रु के बीच हुए युद्ध की आरम्भ से अंत तक की व्याख्या की गई है । कोसल के राजा ने पराजित होने पर अपने अमात्यों (सलाहकारों) से अजातशत्रु से निपटने का उपाय पूछा। अमात्य ने सलाह दी कि भिक्षु मंत्रणा में कुशल होते हैं। गुप्तचरों को भेज विहार में भिक्षुओं की बातचीत सुनवानी चाहिए ।[19]

जेतवन में बहुत से ही राजा के प्रख्यात अधिकारी जिन्होंने सांसारिक सुखों को त्याग दिया था, निवास करते थे । इन्हीं में से दो धनुग्गहतिस्स और मंतिदत्त प्रमुख थे। मगध और कोसल के बीच में इन दोनों के युद्ध सम्बन्धी वार्त्तालाप काफी महत्वपूर्ण हैं । वे उन युद्ध युक्तियों के विषय में वार्त्तालाप करते हैं, जिनसे कोसल द्वारा अजातशत्रु को हराया जा सके ।[20]

[17] चार्ल्स रॉकवेल लान्मेन (एड.), बुद्धिस्ट लेजेंड्स, वॉल्यूम-XXIX, पेज-60

[18] भदंत आनंद कौसल्यायन, जातक खंड-4, पेज-549

[19] वहीं

अंततः कोसल राजा अजातशत्रु को हरा कर बंदी बना लेता है । कुछ दिनों तक दण्डित करने बाद उसे इस शर्त पर छोड़ देता है कि वह इस तरह का विश्वासघात दोबारा नहीं करेगा । सांत्वना के तौर पर अपनी पुत्री वजीरा का विवाह अजातशत्रु से कर देता है । इस युद्ध के अलावा प्रसेनजित का कोसल के किसी अन्य राज्य से कोई दूसरा युद्ध नहीं होता है । इस प्रकार अजातशत्रु के साथ प्रसेनजित कोसल का युद्ध मगध को जीतने के लिए नहीं था, अपितु यह दो सम्बन्धियों के बीच में संघर्ष था ।

विश्वासघाती युक्ति अपनाकर कारायण ने प्रसेनजित कोसल को मार दिया। इसके बाद विडूदभ राजा बना । लेकिन डी. डी. कोसंबी लिखते हैं कि बड़ा होते ही विडूडभ ने कोशल देश का राज बलपूर्वक अपने अधिकार में कर लिया और अपने पिता प्रसेनजित को श्रावस्ती से बाहर कर दिया । ...राजगृह की ओर जाते हुए रास्ते में बहुत कष्ट पाकर वह एक धर्मशाला में मर गया ।[21] राजा बनने के बाद विडूदभ ने शाक्य पर आक्रमण किया और उसे जीता, किन्तु नदी के किनारों पर अचानक आई बाढ़ में उसकी मृत्यु हो गई । कोसंबी के अनुसार, अचिरावती (नदी) में भयंकर बाढ़ आ गई, जिसमें विडूडभ अपनी सेना के साथ बह गया ।[22]

कोसल का पतन

प्रसेनजित और विडूदभ के मरने के बाद न तो कोई राजा हुआ और न ही कोई अनुशासित सेना । चूँकि अजातशत्रु के पास अनुशासित सेना थी । इस कारण बिना संघर्ष के ही कोसल राज मगध के अंतर्गत आ गया । बुद्ध के उपदेश में से प्रमुख उपदेश श्रावस्ती में ही दिए गये थे । किन्तु बौद्ध धर्म की प्रथम संगीति राजगृह में आयोजित हुई थी । इससे

यह ज्ञात होता है कि 485 ई. पू. तक कोसल राज्य अपनी पुरानी शक्ति खो चुका था ।[23]

[20] वहीं (सार, मेरे द्वारा)
[21] डी. डी. कोसंबी, भगवान बुद्ध: जीवन और दर्शन, पेज-40
[22] वहीं

वज्जि

सोलह महाजनपदों के शक्तिशाली राज्यों में वज्जि एक मात्र गणतांत्रिक राज्य था । इसकी राजधानी वैशाली थी । एकपण जातक[24] के अनुसार, उन दिनों वैशाली धन-धान्य से समृद्ध था । नगर तीन दीवारों से घिरा था और वहाँ निगरानी रखने वाले शिखर युक्त तीन फाटक भी थे । वहाँ सदैव राज्य करवाते हुए रहने वाले राजाओं की संख्या सात हजार सात सौ सात होती थी । उतने ही उपराजा होते थे । उतने ही सेनापति । उतने ही भंडारी ।[25]

महावग्ग वैशाली की समृद्धि की व्याख्या करता है और यह दर्शाता है कि यह नगर भव्य, समृद्ध, लोकप्रिय था तथा यहाँ भोजन की कमी नहीं होती थी ।[26] उस नगर में सात हज़ार सात सौ सात महल, इतने ही रमणीय मैदान और इतने ही कमल के फूलों से सुसज्जित तालाब थे । नगर में एक गणिका भी थी । जिसका नाम आम्रपाली था । महापरिनिर्वाण सुत्त के अनुसार, आम्रपाली ने बुद्ध को अपने यहाँ भोजन पर बुलाया था ।[27] जो खूबसूरत, मोहनीय और आकर्षक थी तथा नृत्य, गान और वीणा वादन में भी निपुण थी । इनके यहाँ हजारों अभिलाषी लोग दर्शन को आया करते थे। वह एक रात का पचास कहापना लिया करती थी । आम्रपाली के होने से वैशाली काफी फल-फूल रहा था । ऐसा कहा जाता हैं कि किसी भी राज्य की आर्थिक समृद्धि उसे शक्तिशाली राज्य होने में मदद करती है । एक बार जब बुद्ध वैशाली आए थे, तब उन्होंने आम्रपाली के उपवन में ही विश्राम किया था ।

[23] डी. डी. कोसंबी, एन इंट्रोडक्शन टू द स्टडी ऑफ़ इंडियन हिस्ट्री (बॉम्बे: पोपुलर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 1988), पेज-160
[24] भदंत आनंद कौसल्यायन, जातक, खंड-2, पेज-128
[25] वहीं, पेज-129
[26] राहुल सांकृत्यायन, विनय पिटक, पेज-245
[27] वहीं, पेज-241

जब वैशाली के लिच्छवियों को बुद्ध के आने की ख़बर लगी, तब वह लिच्छवी सुन्दर यानों पर आरूढ़ हो वैशाली से निकले । उनमें से कई लिच्छवी नीले अलंकार वाले (नील वर्ण, नील वस्त्र) थे। कई लिच्छवी पीले थे ।[28] यह सब उनके समृद्धि का बखान करती है । जब बुद्ध ने दूर से ही लिच्छवियों को देखा, उन्होंने भिक्षुओं से कहा :

> "अवलोकन करो भिक्षुओं! लिच्छवियों की परिषद् को। अवलोकन करो भिक्षुओं! लिच्छवी-परिषद् को देव-परिषद् समझो और अवलोकन करो ।"[29]

बुद्ध के यह शब्द वैशाली या लिच्छवियों के समृद्धि का व्याख्या करता है । लोगों के निवास स्थान भी आर्थिक समृद्धि की छटा बिखेरते थे । नगर में आराम करने के लिए रमणीय बगीचे एवं तालाब भी मौजूद थे । वहाँ केवल भौतिक समृद्धि नहीं थी, अपितु नैतिक और अध्यात्मिक उन्नयन के साधन भी मौजूद थे । लोगों के बीच समानता को भी महत्व दिया जाता था । वे अपनी-अपनी योग्यता अनुसार जीवन-यापन करते थे । यहाँ तक कि गणिकाओं को भी अच्छा सामाजिक दर्ज़ा प्राप्त था । वह बुद्ध को भिक्षा देकर पुण्य कमा सकीं और बुद्ध के धार्मिक उपदेश, जोकि सही कार्य, बुद्धिमता तथा ईमानदार विचार से सम्बंधित थे, उन्हें भी सुन सकीं ।[30]

वज्जि की शासन प्रणाली

वज्जि की शासन प्रणाली के अंतर्गत राज्य को चलाने के लिए सात हज़ार सात सौ सात राजा हुआ करते थे । उतने ही उपराजा होते थे । उतने ही सेनापति। उतने ही भंडारी उनके साथ कार्यरत होते थे ।[31] चूँकि सारे महत्वपूर्ण निर्णय शासन प्रणाली के सभी सदस्यों की सहमति से ही लिये जाते थे, इसीलिए यह एक गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली वाला राज्य था । यह ध्यान देने वाली बात है कि वैशाली का गणतंत्र आधुनिक समय के भारत या अन्य देशों जैसा नहीं था । यह एक गणतंत्रात्मक राज्यतंत्र था, जहाँ संभव है कि राजनेताओं का चुनाव होता हो । फिर भी इस चुनाव में राजा ही भाग लेते होंगे, न कि आम जनता। प्रशासन का विकेन्द्रीयकरण दायित्वों के बंटवारों से होता था । सदन में बहुत बड़ी संख्या में योग्य और शिक्षित लोग मौजूद होते थे, जो अपने दायित्वों के निर्वहन के क्रम में एक-दूसरे को निरीक्षण और नियंत्रण की परिधि में रखते थे ।

[28] वहीं
[29] राहुल सांकृत्यायन, दीघनिकाय, पेज-128
[30] वहीं
[31] भदंत आनंद कौसल्यायन, जातक, खंड-2, पेज-129

वैशाली गणराज्य में राजनेता या प्रशासन अधिकारी न्याय सम्बन्धी मामलों का देख-रेख नहीं करते थे, बल्कि इसके लिए न्यायाधीश हुआ करते थे । काशी प्रसाद जायसवाल के अनुसार, सभापति या राजा ही सर्वप्रधान

न्यायकर्त्ता भी होता था । न्याय विभाग का एक मंत्री होता था जो बाहरी या दूसरे देश का भी हो सकता था और जिसे वेतन दिया जाता था ।[32] राज्यनेताओं तथा प्रशासन अधिकारियों द्वारा न्यायालय पर दबाव बनाने का कोई साक्ष्य नहीं मिला है । जब तक राजा, उपराजा तथा सेनापति तीनों अलग-अलग और एकमत होकर स्वीकृति नहीं देते थे, तब तक कोई नागरिक अपराधी नहीं ठहराया जाता था ।[33] इस तरह यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि न्यायिक प्रक्रिया बिना किसी हस्तक्षेप के कार्य करती थी ।

राजकीय समृद्धि के सात तरीके

लिच्छवियों की एकता परस्पर समझ, अनुशासन तथा नैतिकता पर आधारित थी । बुद्ध के द्वारा राजकीय समृद्धि और अखंडता के विषय में दिए गये उपदेश को लिच्छवियों ने बड़े ही आदर, लगन तथा प्रेम से सुना था ।

महापरिनिर्वाण सुत्त में आनंद को संबोधित करते हुए बुद्ध द्वारा सुझाए गये सात उपदेश निम्न हैं :

- जब तक वज्जि लोग पूरी-पूरी और जल्दी-जल्दी सभाएं करते हैं;
- जब तक वे लोग एकमत होकर मिलते हैं और एक साथ मिलकर उन्नति करते हैं;

[32] काशी प्रसाद जायसवाल, हिन्दू राजतन्त्र (अनुदित), पेज-40
[33] वहीं

- जब तक वे कोई ऐसा नियम नहीं बनाते हैं जो पहले से नहीं चला आता है । जब तक वे किसी निश्चित नियम का उल्लंघन नहीं करते हैं और जब तक वे वज्जियों की प्राचीन काल की स्थापित पुरानी संस्थाओं के अनुकूल कार्य करते हैं;
- जब तक वे लोग वज्जि वृद्धों की प्रतिष्ठा, आदर, भक्ति, और सहायता करते हैं और उनकी बातों को सुनना अपना कर्त्तव्य समझते हैं;
- जब तक वे अपने समाज की स्त्रियों और बालिकाओं को बल-प्रयोग करके अथवा भगा लाकर अपने पास नहीं रखते हैं;
- जब तक वे चैत्यों की प्रतिष्ठा, आदर, भक्ति, और सहायता करते हैं;
- जब तक वे अपने अर्हतों का उचित रक्षण और पालन करते हैं;

तक तक वज्ज्ययों के पतन की कभी आशंका नहीं करनी चाहिए, बल्कि हर तरह से उनके उन्नत तथा सम्पन्न होने की ही आशा करनी चाहिए ।[34]

यह देखा जा सकता है कि राजकीय समृद्धि के सात उपायों में स्वतंत्रता, बंधुता, मानवाधिकार, संस्कृति और प्राचीन रीति-रिवाज जैसे विचार शामिल हैं । जिसे बुद्ध किसी भी राज्य को समृद्ध बने रहने के लिए अनिवार्य शर्त बताया । उपरोक्त वर्णित तथ्यों से यह बात भी साफ हो रही है कि किसी भी राज्य में शासक और वहां की आम जनता के बीच कैसा सम्बन्ध होना चाहिए । इन तथ्यों के अनुसार, एक अच्छे शासक को राजकीय हित में ली जाने वाली निर्णयों में आम जनता की भागीदारी की भी वकालत की गयी है ।

मगध के साथ युद्ध तथा वज्जि का पराजय

लिच्छवि शांतिप्रिय लोग थे । वे पड़ोसियों से लड़ना नहीं चाहते थे । वहीं यह भी सत्य है कि लिच्छवि इतने मजबूत थे कि अपने दुश्मनों से अपनी सुरक्षा कर सकते थे । वैशाली की समृद्धि ने अजातशत्रु के वैशाली पर शासन करने की लालसा को जगा दिया था । मगध और वैशाली के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध के बावजूद कई युद्ध लड़े गयें । बुद्ध के महापरिनिर्वाण से पहले अजातशत्रु ने वैशाली पर आक्रमण करने का मन नहीं बनाया । बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद वस्सकर की कूटनीति ने अजातशत्रु को वैशाली पर जीत दिलवाई । इस प्रकार वज्जि गणराज्य मगध की संप्रभुता के अधीन आ गया ।

[34] राहुल सांकृत्यायन (अनु.), दीघ निकाय, पेज- 118-119

मतभेद किसी भी गणतांत्रिक सत्ता प्रणाली का कमजोर बिंदु होता है । इस व्यवस्था में राजनीतिक मामलें तथा उसके फैसले किसी एक राजनेता द्वारा नहीं लिये जाते, बल्कि सदन की सर्वसम्मति से पारित किये जाते हैं । जब सदन के सदस्य बहुत से गुटों में बंटे होते हैं, तब राज्यहित के मामलों में नीति बनाना कठिन हो जाता है ।

लिच्छवियों के आपस में ही मतभेद तथा संघर्ष होने लगे थे । मंत्रियों के बीच आपसी सहयोग तथा दायित्वों का आभाव नज़र आता था । चूँकि वे अब संगठित नहीं थे, इसीलिए अजातशत्रु के लिए उन्हें हराना आसन हो गया था ।

निष्कर्ष:

बुद्ध के समय में राजनीतिक स्थितियां एवं उसकी संरचना बहुत जटिल नहीं थी । यह दो भागों में बंटी थी- एक राजतन्त्र तथा दूसरा गणतंत्र । सोलह महाजनपदों में कुछ दूसरों पर निर्भर थे तथा कुछ स्वतंत्र थे। केवल पांच महाशक्तिशाली राज्य के रूप में देखे जाते थे, जिनमें से चार महाजनपदों में राजतन्त्र तथा एक में गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली थी । राजतंत्रात्मक शासन प्रणाली का

मुख्य आधार आर्थिक समृद्धि तथा राजनेताओं के व्यक्तित्व पर निर्भर करता था । लेकिन गणतंत्रात्मक राज्य का आधार आर्थिक शक्ति एवं सदन में निर्णय लेने वाले राजनेताओं पर निर्भर करता था । अंतरराज्यीय नीतियाँ बनाने के लिए परस्पर शक्तियों के बीच वैवाहिक सम्बन्ध को बढ़ावा दिया जाता था तथा आर्थिक मदद भी की जाती थी ।

राज्य के पारस्परिक संबंधों में एक सामान्य सौहार्द्र होता था क्योंकि अधिकतर शासक बुद्ध के धार्मिक उपदेशों से प्रभावित थे। और इस प्रकार बुद्ध को एक मित्र, स्वामी तथा राजाओं के राजा के रूप में देखा जाता था ।

सन्दर्भ-सूची:

1. जातक खंड-2 और 4, भदंत आनंद कौसल्यायन (अनु.), प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन
2. दीघ निकाय (अनूदित), राहुल सांकृत्यायन. सारनाथ (बनारस): महाबोधि सभा, 1935
3. विनय पिटक (अनूदित), राहुल सांकृत्यायन. सारनाथ (बनारस): महाबोधि सभा, 1935
4. कोसम्बी, धर्मानन्द. भगवान बुद्ध: जीवन और दर्शन, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2008
5. विद्यालंकार, सत्यकेतू. प्राचीन भारत की शासन और राजनीतिक विचार, मसूरी: श्री सरस्वती सदन, 1975
6. डेविड्स, टी. डब्लू. रायस. बुद्धिस्ट इंडिया, दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 1984.
7. रायचौधरी, डॉ. हेमचन्द्र. प्राचीन भारत के राजनैतिक इतिहास, इलाहाबाद: किताब महल, 1971'
8. लान्मेन, चार्ल्स रॉकवेल (एड.), बुद्धिस्ट लेजेंड्स, वॉल्यूम-XXIX ट्रांस, यूजीने वास्टन बुर्लिंगामे, लन्दन: पालि टेक्स्ट सोसाइटी, 1979
9. कोसंबी, डी. डी. एन इंट्रोडक्शन टू द स्टडी ऑफ़ इंडियन हिस्ट्री, बॉम्बे: पोपुलर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 1988
10. थापर, रोमिला. पूर्वकालीन भारत (अनु- आदित्य नारायण सिंह), नई दिल्ली: हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2016
11. बापट, पी. वी. बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष, दिल्ली: प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 1956
12. जायसवाल, काशी प्रसाद. 'हिन्दू राजतन्त्र, वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2016